कुण्डलिनीस्तवः

देवी कुण्डलिनी की स्तुति

श्लोक १

श्री कुल कुण्डलिनी अपने भक्तों को जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति दिलाने के लिए सदैव अवसर खोजती हैं। वे शाश्वत तरुणी हैं। वे वेदों, अन्य शास्त्रों और बीजाक्षरों की स्रोत हैं। इस संसार में योगीजन मन द्वारा उनका बोध प्राप्त करते हैं। कभी-कभी वे सन्तों के सद्वचनों द्वारा संचारित होती हैं। वे मंगलमयी, मेरी रक्षा करें जिससे मैं दिव्य एकात्म प्राप्त कर सकूँ। मैं ऐसा समझता हूँ कि मैं उनके प्रिय दास के स्थान पर हूँ। हे माँ, आप स्वभाव से ही आदिदेव शिव की संगिनी हैं और मैं दीनातिदीन बद्धजीव हूँ।

श्लोक २

कुल कुण्डलिनी लाल रंग की आभा से युक्त हैं। वे अमृतमयी चाँदनी हैं। वे वर्णों का स्वरूप हैं। वे सर्पाकार हैं और निद्रा में हैं। हे भगवती, आप जो [मनुष्य की] जाग्रत अवस्था में कूर्म नाड़ी में निवास करती हैं, कृपया मेरी ओर दृष्टि करें। मेरा शरीर निरन्तर वैदिक और अन्य अनुष्ठानों में लगा रहता है और माँस से उत्पन्न होनेवाली दुर्गन्ध के दोष से युक्त है। हे देवी, इस शरीर को अपनी कोटि-कोटि चन्द्रकिरणों के छोटे-से भाग के स्पर्श से शाश्वत बना दें।

श्लोक ३

जो पूर्णत्व चाहता है और अपने दोषों को जानता है, श्रीकुण्डलिनी के ज्ञान से पृथ्वी पर रहते हुए विजयी होता है। इन मंगलमयी देवी [श्री] की कृपा से माया का असत्य मार्ग कुल कुण्डलिनी का मार्ग बन जाता है और मुक्ति की नगरी तक पहुँचा देता है। यदि कोई प्रातःकाल या मध्याह्न काल में नियमित रूप से कुल कुण्डलिनी के पाठरूपी चरण-कमलों की आराधना करता है तो वह साधना में सफल होता है।

श्लोक ४

हे महापवित्रे! हे कामनाओं के फलों को जड़ से नष्ट करनेवाली! [योगीजन] सदैव उचित रीति से आपके शाश्वत प्रतीकात्मक सर्पाकार रूप का, मूलाधार के चतुर्दल कमल पर, ध्यान करते हैं जहाँ वायु और आकाश हैं। जो पूज्या कुण्डला का चिन्तन नमस्कारों से तथा ऐसे कल्याणकारी स्तोत्रों द्वारा करते हैं, जिनका उद्‌भव सिद्धकुल से हुआ है, वे मुक्त हो जाते हैं। देवी कुण्डलिनी ज्ञान हैं। देवी कुण्डलिनी स्वयं में से उत्पन्न हैं। वे माया [मोहकारिणी शक्ति] तथा क्रिया [कार्यशक्ति] हैं।

श्लोक ५

मूलाधार में स्थित वे योगिनी ब्रह्मा और शिव को भी सम्मोहित कर लेती हैं। वे तीनों लोकों की छाया के पर्दे को हटा देती हैं, भासमान सांसारिक महासुखों का नाश करती हैं और समस्त अन्तर-ग्रन्थियों को भेद देती हैं। वे स्वयं ही सर्परूप धारण करती हैं। वे सूक्ष्मतम से भी सूक्ष्म हैं। वे ब्रह्मज्ञान में विलास करनेवाली परा शक्ति हैं। वे शरीर में निवास करनेवाली तथा सांसारिक बन्धनों पर आघात करनेवाली के रूप में जानी जाती हैं।

श्लोक ६

मैं श्री कुल कुण्डलिनी को नमन करता हूँ। वे स्वयम्भू की प्रिया हैं और उन्हें अपने समस्त सहचरों के साथ तीन घेरों में लपेटे हुए हैं। वे सहस्रार [चिदाकाश] में प्रवेश करती हैं और एक प्रेमोन्मत्त मन की तरह सक्रिय हो जाती हैं। वे तरुणी हैं, सबला हैं, सम्पूर्ण हैं। वे देदीप्यमान वेदमुखी देवी अपने भक्तों के लिए सब कुछ प्राप्त कराती हैं और जो उनसे विमुख हो जाते हैं, उन्हें सुधारती हैं। मैं उन स्वयम्भू की पत्नी की वन्दना करता हूँ जो अपने इष्टगण के साथ शीर्ष के मध्य में, सहस्रार में, विलास करती हैं। वे क्रिया शक्ति हैं।

श्लोक ७

वे मृदंग का मादक नाद हैं और समस्त मन्त्रों व करोड़ों [भक्तों के] संगीतमय स्वरों की गूँज हैं। वे प्राणेश्वरी हैं। आनन्ददायी अमृत-सागर में जिसकी जड़ें स्थित हैं, ऐसे खिले हुए कमल के समान उनका मुख उल्लासपूर्ण है। आषाढ़ मास [वर्षा का महीना] में छानेवाली मेघराशि से उत्पन्न अन्धकार के समान उनका मुख श्यामल है। वे सभी का अवलम्ब हैं। सुषुम्ना के सूक्ष्म पथ पर विचरण करनेवाली वे माता हर ओर से मेरी रक्षा करें। वे योगियों का कल्याण करनेवाली हैं।

श्लोक ८

हे माँ, आपका आश्रय पा कर लोग तत्काल वैकुण्ठ [विष्णु के धाम] तथा कैलास [शिव के धाम] पहुँच जाते हैं। आप केवल आनन्द में ही विलास करती हैं। आपके मुख से सैकड़ों चन्द्रमाओं का उल्लास व्यक्त होता है। आप सबका मूल कारण हैं। हे माँ, शक्ति की परमप्रिय प्रकट रूप, हे श्री कुल कुण्डलिनी, हे शक्ति के काली रूप को प्रकाशित करनेवाली, हे कल्याणी! मैं आपके उस निवास-स्थान, मूलाधार को प्रणाम करता हूँ। मुझ बद्धजीव का उद्धार कीजिए।

श्लोक ९

कुण्डलिनी शक्ति के पथ पर चलते हुए यदि कोई इस महाफलदायी स्तोत्राष्टक का पाठ प्रातः उठ कर करता है, तो वह योगी दृढ़ता प्राप्त करता है।

श्लोक १०

इस स्तोत्र के पाठ से, निश्चय ही क्षण भर में वह कवियों का स्वामी हो जाता है। कुण्डलिनी योग का अभ्यास करनेवाला योगी पवित्र और महान बन जाता है और ब्रह्म के साथ एक हो जाता है।

श्लोक ११

हे प्रभु! इस प्रकार मैंने आपके समक्ष यह सुन्दर कुण्डलिनीस्तवः गाया। इस स्तोत्र के प्रसाद से मनुष्य देवताओं के गुरु के समान विद्वान हो जाता है।

श्लोक १२

उनके स्तोत्र के प्रसाद से सब देवताओं को सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं और सभी देवों के देव, सृष्टिकर्ता ब्रह्मा असंख्य युगों तक जीवित रहते हैं।

© २०१९ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

श्रीगुरुमाई द्वारा गाए इस स्तोत्र की रिकॉर्डिंग सिद्धयोग बुकस्टोर पर उपलब्ध है।